प्रेम की परीक्षा

परीक्षा मे बैठने वाला प्रत्येक परीक्षार्थी आशातीत सफलता की चाहना किया करता है, परन्तु यथेष्ट सफलता उन्हें ही प्राप्त हुआ करती है, जो वर्ष भर निरन्तर लगन के साथ अपनी पढ़ाई में मगन रहते हैं। दिन में भी पढ़ते हैं, रात को भी पढ़ते हैं और पढ़ने के बाद सपने में भी अपनी पढ़ाई से सम्बन्धित विषयों का ही सपना देखते हैं। यू.पी. बोर्ड की इण्टरमीडिएट की परीक्षा में मेरिट लिस्ट में प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली दो छात्राओं से जब 'दैनिक जागरण' अखबार वालों ने पूछा कि आप दोनों ने कहां से कोचिंग ली है तो उनका स्पष्ट उत्तर था कि टयूशन पढ़ने वाले छात्र प्रथम श्रेणी तो प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु श्रेष्ठता की सूची यानि मेरिट लिस्ट में प्रथम या द्वितीय स्थान कभी भी नहीं प्राप्त कर सकते। हमारी सफलता का श्रेय है - लगन, मगन और सपन।

अध्यात्म के कठिन मार्ग पर चलते तो लाखों हैं जो यह दावा करते हैं कि हमें पारब्रह्म से बहुत प्रेम है, परन्तु हमारी श्री मुखवाणी क्या कहती है -

प्रेम-प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न चीन्हे कोए।
आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावे सोय।।
झण्डा गाड़यो प्रेम का, चहुं दिश पिउ-पिउ होए।
न जाने इस झुण्ड में, कौन सुहागिन होए।।

अखण्ड सुहागिन वही हो सकती है जो अपने धनी के मार्ग पर तन मन और जीव तीनों को कुरबान कर दे। श्री राज जी और श्री श्यामा जी के युगल स्वरुप को चित में धारण कर और दोनो स्वरुपों की शोभा और सिनगार में अपने जीव को मगन कर दे और संसार से हटा कर टुकड़े-टुकड़े कर दे।

यों स्वरुप दोऊ चित मे लीजे, अंग वार-डार के दीजे।।
गलित गात सब भीजे, जीव भान-भून टूक कीजे।।

परिकरमा ३/१७८

लगन और मगन के साथ जब हम अपनी मैंखुदी को कुरबान करते हैं तो हमारा मन स्वच्छ होना प्रारम्भ होता है। तन हल्का, मन हल्का, जीव हल्का और परिणाम स्वरुप जीव और आतम के मध्य पड़ा परदा भी हल्का। धीरे-धीरे बारीक होते-होते यह समाप्त हो जाता है और आत्मा हर पल श्री राज जी का दीदार कर सकती है। संध्या आरती में रोज बोलते हैं -

तन दीपक, मन ज्योति करुं, प्रेम घृत लौ लाये।
शोभा लखि श्री राज की, आरती करुं चित ल्याए।।

तन का दीपक होगा, मन की ज्योति होगी और प्रेम का घी होगा तभी जीव का अंधेरा

Nijanand App

समाप्त होगा और अब जाग्रत हो कर रंगमोहोल की लीला, मूल मिलावा की शोभा, परमधाम के पच्चीस पक्षों की चितवन के अखण्ड सुखों को प्राप्त करेगा। जैसे-जैसे जोश और इश्क आता जायेगा, अन्तःकरण का प्रकाश भी बढ़ता जायेगा। अब परआतम से आतम और आतम से जीव, जीव से मन, मन से इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान की रोशनी फैलायेगा। अब जीव का स्वप्न साक्षात हो चुका है। जिस जीव को नीच, भूण्डा, खांगडू जैसे निकृष्ट विश्लेषण दिये जाते हैं वो उत्कृष्ट हो जायेगा। आतम के संग का तोहफा जीव को यह प्राप्त हुआ कि उसे परमधाम के अखण्ड सुख तो जीते जी मिले ही, मरणोपरान्त भी उसके जीव को आवगमन के भयंकर कष्टों से मुक्ति के साथ-साथ बहिश्त का सुख भी प्राप्त होगा अर्थात श्रेष्ठता की सूची में अव्वल स्थान। प्रमाण देखें -

मुख बीड़ी आरोगाये पान की, साहिब अर्ज सुनि लीजे।
मोमिन को तुम कियो है सिफायत, अब बुत कायम कीजे।।

हे मेरे साहिब, अपने हृदय के शुद्ध भावों को भोग के रुप में समर्पित करने के पश्चात अब केवल एक ही आखिरी अर्जी है कि आपने मेरे ऊपर तो मेहेर की, जो मुझे वाणी रुपी पान और बीड़ा अपने हाथों से स्वयं दिया। इसका सेवन करके मेरी आतम अपनी मूल खिलवत तक पहुंच गई है। अब मेरे जीव को भी कायमी प्रदान करें ताकि वो आवागमन के चक्कर से मुक्त होकर बहिश्त के अखण्ड सुख प्राप्त करे।

परमधाम से इस खेल में हम मन के द्वारा उतरे हैं। मन ने ही कुल अक्ल को फिरा दिया और हमने खेल मांग लिया। वहीं से श्री राज जी हमारे साथ आये हैं और यहां मोमिनों के दिल में बैठ कर खेल दिखा रहे हैं। हमारे ऊपर हंसी करने के लिए भुला रहे हैं। श्री राज जी ने हमारे मन को ऐसा भुला दिया है कि खेल देख कर हम अपने घर और धनी को भूल गये।

पासे बैठ के खेल देखावें, हांसी करने को आप भुलावें।
भूलिया आप खसम वतन, खेल देखाया फेराये के मन।।

जीव की रचना मन, चित, बुद्धि और अंहकार से हुई है और माया से इसे छुड़ाने के लिए दुर्लभ तारतम वाणी का अवतरण हुआ है। जिस प्रकार किताबी ज्ञान के अभाव में व्यक्ति अनपढ़ कहलाता है उसी प्रकार जागृत बुद्धि के संपूर्ण ज्ञान के बिना जीव का जागरण नहीं हो पाता। जागृत बुद्धि के दिव्य ज्ञान के प्रकाश के साथ-साथ जीवात्मा का स्वरुप खड़ा हो जाता है। अब चारों अन्तःकरण इश्क का साक्षात स्वरुप हो जाते हैं। इनकी चितवन, बातें सब प्रेम और इश्कमयी हो जाती हैं। इश्क के बिना और उन्हें कुछ दिखाई ही नहीं देता।

अन्तसकरन इश्क के, इश्के चित चितवन।
बातां करे इश्क की, कछु देखे न इश्क बिन।।

Nijanand App

इश्क के साथ ही साथ ज्ञान से क्षीर नीर विवेक भी प्राप्त होता है और वो हंस बन कर माया और ब्रह्म को जुदा करता है। परिवार और समाज के समस्त उत्तरदायित्वों को निभाता हुआ अध्यात्म के पथ पर निर्विध्न बढ़ता चला जाता है क्योंकि -

हम तो हाथ हुकम के, हक के हाथ हुक्म।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जानों त्यों करो खसम।।

अब अंहकार का स्थान आनन्द ले लेता है और जीव हंस नहीं रहता, बल्कि परमहंस बन जाता है और धनी को जाग्रत जीव को सुख देने नहीं पड़ते, बल्कि स्वतः मिलते चले जाते है। परमधाम के परम सत्य से साक्षात्कार होने के कारण वो परम आनन्द को प्राप्त करता है और अब इस आनन्द के रस को निर्स्वाथ भाव से परिवार, समाज और देश को बांटता है। 'वसुधैव कुटुम्ब' की मान्यता को प्रमाणित करने के साथ ही साथ निजानन्द सम्प्रदाय के तारतम के कौल को भी निभाता है।

ऐ सुख देंऊ ब्रह्मसृष्टि को, तो मैं अंगना-नार।
जब ए सुख अंग में आवहि, तब छूट जाए विकार।।
आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्री अक्षरातीत भरतार।

इस प्रकार आत्मा ने इस आनन्द का अनुभव कर संसार को बताया। जब जीव पूरी तैयारी के साथ परीक्षा में बैठा, तन स्वार्थ मे नहीं सेवा में लगाया, मन को इन्द्रियों की झूठी खवाहिशों मे नहीं सयंम में लगाया। चित को संसार में नहीं, धनी में लगाया। अब अक्षर के जीव ने उसके चेतन चित में बहिश्त पाई और आतम ने परमधाम का अखण्ड आनन्द पाया। प्रेम, सेवा और संयम द्वारा ही धीरे-धीरे एक पारलौकिक परीक्षा उत्तीर्ण हो जाती है। यदि हम निजानन्द सम्प्रदाय का इतिहास देखें तो जाग्रत जीवों को श्री राज जी के द्वारा परम-नाम भी मैडल के रुप में प्राप्त होते हैं। जैसे श्री धनी देव चन्द्र जी सुन्दर बाई, हम सब सुन्दरसाथ के लिए जिन्होंने अनेको कसाले सहे। श्री मेहराज ठाकुर इन्द्राबाई, इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण रखने के कारण ही इन्द्रावती कहलाईं। श्री छत्रसाल जी महाराज-छत्ता कहलाये धर्म-राज्य की स्थापना की और सुन्दरसाथ के ऊपर एक छत्र की भांति अमीरुल मोमिन के रुप मे शोभायमान हुए। उनके राज्य की सीमा का वर्णन श्री लालदास ने इस प्रकार किया -

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस।
छत्रसाल सो लरन की, रही न काहू को होंस।।

इसके अतिक्ति श्री झण्डूदत जी को रतन बाई के नाम से भी जाना जाता है, जिन्होंने जीवन को एक अमूल्य रतन की भांति ज्योलित किया।

श्री इन्द्रावती जी जिनके मुखारविन्द से श्री राज जी, श्री श्यामा जी के द्वारा यह प्रेम

Nijanand App

और ज्ञान से भरपूर यह सम्पूर्ण वाणी अवतरित हुई, जाग्रत बुद्धि के द्वारा सुन्दरसाथ को पहले जगाती है और उसके पश्चात चितवन के द्वारा मूल परमधाम के सुखों से साक्षातकार करवाती है। वही सुन्दरसाथ की प्रेम की परीक्षा लेती है उनके प्रेम को तौलती है और धाम का दरवाजा खोलती है क्योंकि वही तो धाम के दरवाजे पर खड़ी हुई कब से यह पुकार कर रही है।

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुम्हारा काम जी।
प्रेम में मगन रहिये, खुल्या दरवाजा धाम जी।
हाथ जोड़ कर कहें सदा, एक दूसरे को प्रणाम जी।।

नीरु खुराना, कानपुर

स्मृति भवन के भव्य उद्घाटन पर समर्पितयाँ

स्मृति ने ली अंगड़ाई तो, स्मृति स्मारक उभर आया।
याद जो तेरी दिल में आई, गुजरा वो सुहाना वक्त याद आया।

अर्न्तमन में जो बीज आज
वृक्ष बनकर लहरा रहा है,
वो बीज तुमने ही तो डाला था
सींचा भी तुमने, देखभाल भी तुमने की
अँकुरण के वक्त, कितने प्यार से
तुमने सहलाया था।

तुमने ही बतलाया-तूँ कौन,
इत आई क्यों कर, कहाँ है तेरा वतन,
कौन है तेरा खसम।
खिलवत की याद दिलाकर
हमारे अंहकार को मूल से नष्ट कर।
रुहों को शोभा के सागर में डुबोकर
एक दिली का पाठ पढ़ाया।

जुगल स्वरुप की शोभा हृदय में उतार दी
इलम से पहचान दे, इश्क की लज्जत का पान कराया।
अपनी प्यारी निसबत जानकर
मेहेर के सागर में हमें नहलाया।।

अब जाना, तुम्हीं तो थे सर्वरस सागर
तुम्हीं तो थे मेरे प्राणनाथ
तुम्हें भूल जाँऊ स्वपन में भी
यह सोचकर, दिल दहल जाता है।

एक एहसान तेरा यदि याद आ जाऐ
तो चौदह तबक छूट जाता है।।

प्रणाम जी

सुनील निजानंदी, कानपुर

Nijanand App